

3. कोविड-19 का कर्मचारियों के कार्य क्षमता पर प्रभाव

रविना राठौर

शिक्षिका (TGT), (शिक्षा संकाय),

संत जॉन अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, खरसिया, रायगढ़, छत्तीसगढ़.

परिचय

कोविड-19 महामारी कोरोना वायरस नामक मानव निर्मित वायरस के कारण हुई थी। यह एक संक्रामक बीमारी है जिसने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। इस महामारी ने पूरी दुनिया को अलग-अलग तरीके से प्रभावित किया है। इसका सबसे पहले निदान 2019 में चीन के वुहान में हुआ था, लेकिन बाद में, मार्च 2020 में, WHO ने घोषणा की कि यह एक महामारी है जो पूरी दुनिया को जंगल की आग की तरह प्रभावित कर रही है। कोविड-19 एक संक्रामक बीमारी है। चूंकि यह एक वायरल बीमारी है, इसलिए वायरस विभिन्न रूपों में तेजी से फैलता है।

इस बीमारी के मुख्य लक्षण गंध और स्वाद की कमी, ऊर्जा की कमी, पीली त्वचा, छींकना, खाँसी, ऑक्सीजन के स्तर में कमी आदि थे। इसलिए, सभी प्रभावित लोगों को अप्रभावित लोगों से खुद को अलग करने के लिए कहा गया था। प्रभावित लोगों को उनके परिवार के सदस्यों से अलग कमरे में रखा गया था।

सरकार ने लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। फ्रंटलाइन कार्यकर्ता सुपरहीरो की तरह थे जिन्होंने लोगों की सुरक्षा के लिए निस्वार्थ भाव से काम किया। बहुत से डॉक्टरों को अपने मरीजों और अपने करीबी लोगों की सुरक्षा के लिए अपने परिवार और अपने बच्चों से दूर रहना पड़ा। सरकार ने महत्वपूर्ण कदम उठाए और लोगों की सुरक्षा के लिए कई प्रोटोकॉल लागू किए। सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन और शटडाउन लागू किया। कोविड-19 महामारी के कारण संगठनों के प्रबंधन और कर्मचारियों के व्यवहार और कार्यों में कुछ बदलाव हुए हैं।

इस अध्याय का उद्देश्य कर्मचारियों के स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण के साथ-साथ उनके कार्य प्रदर्शन पर कोविड-19 महामारी के प्रभावों की जांच करना है। इसके अलावा, इसका उद्देश्य यह उजागर करना है कि क्या स्वास्थ्य और कार्य-संबंधी तनाव कारक उपरोक्त संबंधों में मध्यस्थता करते हैं। एक ओर कर्मचारियों द्वारा महसूस किए गए महामारी के प्रभावों ने सीधे उनके मानसिक और शारीरिक कल्याण को प्रभावित नहीं किया।

कोविड-19 का दौर

दूसरी ओर, कर्मचारियों द्वारा महसूस किए गए कोविड-19 महामारी के प्रभावों ने उनके सामान्य कार्य प्रदर्शन को प्रभावित किया। अध्ययन के निष्कर्ष संगठनों और उनके कर्मचारियों के लिए महामारी द्वारा उत्पन्न प्रभावों को कम करने के लिए सबसे प्रभावी उपायों को अपनाने के लिए एक उपयोगी परिप्रेक्ष्य प्रदान कर सकते हैं।

*“हम मेहनत करने वाले,
दुनिया वालों से जब,
अपना हिस्सा मांगेंगे।
तब एक खेत नहीं,
एक देश नहीं,
सारी दुनिया उनसे मांगेंगे।।”*

यह अध्याय, कोविड-19 का कर्मचारियों के कार्यक्षमता पर प्रभाव, पर आधारित है, जिसमें कोविड-19 क्या है?, इसे जानना और समझने, तथा भारत में कर्मचारियों की स्थिति एवं कोविड-19 के कारण कर्मचारियों के कार्य क्षमता पर प्रभाव को जानने एवं समझना का प्रयास करेंगे।

बीज शब्द— कोविड-19, कोरोना वायरस कैसे फैलता है?, कोरोना वायरस की शुरुआत कैसे हुई?, कोरोना वायरस के लक्षण क्या है?, लॉकडाउन में भारत की पहली पहल, लॉकडाउन का असर, भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम, मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना, कर्मचारी, कर्मचारी कितने प्रकार के होते हैं?, कोविड-19 का कर्मचारियों पर सकारात्मक प्रभाव, कोविड-19 का कर्मचारियों पर नकारात्मक प्रभाव।

कोविड –19

कोरोना वायरस एक प्रकार का वायरस है। इसके कई प्रकार हैं और कुछ बीमारी का कारण बनते हैं। 2019 में पहचाने गए कोरोना वायरस SARS&CoV-2 ने श्वसन संबंधी बीमारी की महामारी फैलाई है, जिसे COVID-19 कहा जाता है।

कोरोना वायरस कैसे फैलता है?

कोरोना वायरस संक्रमित व्यक्ति के सांस लेने, बात करने, हंसने, गाने, खांसने या छींकने से हवा में निकलने वाली बूंदों और वायरस कणों के माध्यम से फैलता है। बड़ी बूंदें कुछ सेकंड में जमीन पर गिर सकती हैं, लेकिन छोटे संक्रामक कण हवा में रह सकते हैं और इनडोर स्थानों पर जमा हो सकते हैं, खासकर जहां बहुत से लोग इकट्ठे होते हैं और खराब वेंटिलेशन होता है।

यही कारण है कि COVID-19 को रोकने के लिए मास्क पहनना, हाथ साफ रखना और शारीरिक दूरी बनाए रखना जरूरी है।

दो गज की है दूरी, मास्क है जरूरी

कोरोना वायरस की शुरुआत कैसे हुई?

COVID-19 का पहला मामला 1 दिसंबर, 2019 को रिपोर्ट किया गया था, और इसका कारण तब का नया कोरोनावायरस था जिसे बाद में SARS&CoV-2 नाम दिया गया। SARS&CoV-2 की उत्पत्ति किसी जानवर में हुई होगी और उसने परिवर्तन (उत्परिवर्तित) किया होगा, इसलिए यह मनुष्यों में बीमारी का कारण बन सकता है।

अतीत में, कई संक्रामक रोग प्रकोपों का पता पक्षियों, सूअरों, चमगादड़ों और अन्य जानवरों में उत्पन्न होने वाले वायरस से लगाया गया है जो मनुष्यों के लिए खतरनाक बनने के लिए उत्परिवर्तित हुए। शोध जारी है, और अधिक अध्ययन से पता चल सकता है कि कैसे और क्यों कोरोना वायरस महामारी रोग का कारण बना।

कोरोना वायरस के लक्षण क्या हैं?

COVID-19 के लक्षणों में शामिल हैं—

खाँसी, बुखार या ठंड लगना, सांस लेने में तकलीफ या सांस लेने में कठिनाई, मांसपेशियों या शरीर में दर्द, गला खराब होना, स्वाद या गंध की नई हानि, दस्त, सिरदर्द, थकान, मतली या उलटी, नाक बंद होना या नाक बहना आदिस कोरोना वायरस से संक्रमित कुछ लोगों में कोविड-19 बीमारी हल्की होती है, जबकि अन्य में कोई लक्षण नहीं होते। हालांकि, कुछ मामलों में कोविड-19 श्वसन विफलता, फेफड़े और हृदय की मांसपेशियों को स्थायी क्षति, तंत्रिका तंत्र की समस्याएं, गुर्दे की विफलता या मृत्यु का कारण बन सकता है। अगर आपको बुखार है या ऊपर बताए गए कोई भी लक्षण हैं, तो डॉक्टर के दफ्तर, आपातकालीन देखभाल केंद्र या आपातकालीन कक्ष में जाने से पहले अपने डॉक्टर या स्वास्थ्य सेवा प्रदाता को फोन करें और फोन पर अपने लक्षण बताएं।

लॉकडाउन में भारत की पहली पहल

24 मार्च 2020 की शाम को, भारत सरकार ने भारत में ब्रिटिश-19 महामारी के खिलाफ निवारक उपाय के रूप में भारत की पूरी 1.38 बिलियन (138 करोड़) आबादी की आवाजाही को सीमित करते हुए 21 दिनों के लिए देशव्यापी तालाबंदी का आदेश दिया।

कोविड-19 का दौर

यह 22 मार्च को 14 घंटे के स्वेच्छिक सार्वजनिक कर्फ्यू के बाद आदेश दिया गया था , इसके बाद COVID-19 प्रभावित देशों में कई नियमों को लागू किया गया था। लॉकडाउन तब रखा गया था जब भारत में पुष्टि किए गए सकारात्मक कोरोनावायरस मामलों की संख्या लगभग 500 थी। इसकी घोषणा के बाद, देश भर में लोगों के बड़े पैमाने पर आंदोलन को 1947 में भारत के विभाजन के बाद से सबसे बड़ा बताया गया था। पर्यवेक्षकों ने कहा कि लॉकडाउन ने महामारी की वृद्धि दर को 6 अप्रैल तक हर छह दिन में दोगुना होने की दर से धीमा कर दिया था, जैसे ही पहले लॉकडाउन की अवधि समाप्त होने वाली थी, राज्य सरकारों और अन्य सलाहकार समितियों ने लॉकडाउन को बढ़ाने की सिफारिश की। ओडिशा और पंजाब की सरकारों ने राज्य लॉकडाउन को 1 मई तक बढ़ा दिया।

महाराष्ट्र , कर्नाटक , पश्चिम बंगाल और तेलंगाना ने भी इसका अनुसरण किया। 14 अप्रैल को, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी राज्यों के राज्यपालों और लेफ्टिनेंट गवर्नरों की लिखित सिफारिश पर 3 मई तक देशव्यापी तालाबंदी को बढ़ा दिया, 20 अप्रैल के बाद उन क्षेत्रों के लिए सशर्त छूट के साथ जहां प्रसार को नियंत्रित किया गया था या न्यूनतम था।



लॉकडाउन का असर—

कोरोना वायरस के अत्यंत फैलाव से पूरे देश में लॉकडाउन की वजह से कई सरकारी व्यवसाय और उद्योग प्रभावित हुए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 24 मार्च को 21 दिन के लिए कठोर लॉकडाउन की घोषणा की गई, घरेलू संतुष्टि और आवश्यकता परिवर्तित होने के चलते आर्थिक वृद्धि दर संशोधित हुई। वहीं घरेलू निवेश में जोखिम बढ़ने से निवारण में भी समय लगने की प्रायिकता दिख रही थी। विश्व बैंक के अनुसार भारत ही नहीं इस महामारी की वजह से समूचा दक्षिण एशिया गरीबी निर्मूलन से मिले लाभ को गवा सकता है। विश्व बैंक

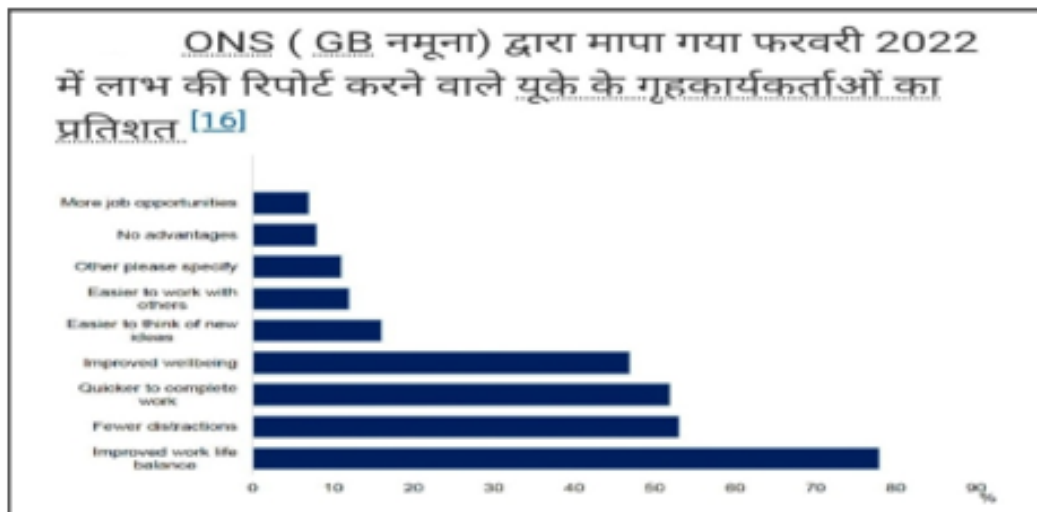
के मुख्य अर्थशास्त्री हैंड स्टीमर ने कहा कि, भारत का परिदृश्य अच्छा नहीं है, यदि भारत में ज्यादा समय तक लॉकडाउन जारी रहता है, तो यह आर्थिक स्तर विश्व बैंक के आकलन से अधिक खराब हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत को सबसे पहले इस चुनौती से निपटने के लिए कोरोना महामारी के विस्तृत होने की गति को रोकना होगा और साथ ही यह भी पुष्टि करना होगा कि प्रत्येक को खाना मिल सके।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघ ने कहा कि यह महामारी सिर्फ एक विश्वव्यापी स्वास्थ्य प्रणाली नहीं है, बल्कि एक बड़ा आर्थिक विपत्ति और श्रमिक मार्केट भी बन गया है, जो बड़े मानदंड पर लोगों को प्रभाव डालेगा। हमारी अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत जीडीपी अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है, और इस लॉकडाउन का सबसे ज्यादा असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ा।

लॉकडाउन के दौरान छोटे उद्योग एवं काम-धंधे वाले काम नहीं कर पा रहे थे, वह कच्चा माल नहीं खरीद पा रहे, और ना ही बना हुआ माल बाजार में नहीं बेच पा रहे थे, जिससे उनकी कमाई का जरिया बंद हो गया और हमारी अर्थव्यवस्था पर असर पड़ा। कोरोना वायरस भारत में पूरी दुनिया की अपेक्षा तेजी से फैल रहा था।

वर्तमान में भारत में 40 लाख से अधिक मामले पाए गए थे और लगभग 90,000 से अधिक मौत हुई थी। इसलिए भारत में श्रमिकों की कमी के कारण रोजगार को बड़ा नुकसान हुआ।

फरवरी 2022 में, ऑफिस फॉर नेशनल स्टैटिस्टिक्स (ONS) द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि यूके में घर से काम करने वाले (कुछ क्षमता में) तीन-चौथाई से अधिक (78 प्रतिशत) लोगों ने कहा कि काम करने के इस तरीके से उन्हें बेहतर कार्य-जीवन संतुलन मिला। जैसा कि नीचे चित्र 4 में बताया गया है, इस सर्वेक्षण में बताए गए अन्य लाभ दक्षता और बेहतर कल्याण की धारणाओं से संबंधित थे।



कोविड-19 का दौर

भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम—

केंद्रीय मंत्रालयों द्वारा राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के साथ मिलकर कोविड-19 के प्रबंधन के लिए मजबूत सामुदायिक निगरानी, क्वारंटीन सुविधाएं, आइसोलेशन वार्ड, पर्याप्त पीपीई, प्रशिक्षित जनशक्ति, त्वरित प्रतिक्रिया दल आदि के संदर्भ में विभिन्न उपाय किए गए।

मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना—

भारत सरकार द्वारा कोविड-19 महामारी की रोकथाम हेतु कार्य कर रहे स्वास्थ्य कर्मियों के लिए प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज के अंतर्गत विशेष बीमा योजना प्रारम्भ की गई थी। मध्य प्रदेश शासन द्वारा राज्य में कोविड-19 महामारी की रोकथाम हेतु योद्धाओं की तरह सेवा दे रहे कर्मियों के कल्याण के लिए मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना लागू की। मध्य प्रदेश राज्य के कोविड-19 प्रभावित रोगियों को नागरिकों ने अपनी सेवा प्रदान किए, कोविड-19 योद्धाओं के कल्याण के लिए, यह योजना लागू की गई।

पात्र कर्मी—

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, चिकित्सा शिक्षा विभाग एवं आयुष विभाग के समस्त सफाई कर्मचारी, वार्डबॉय, नर्स, आशा कार्यकर्ता, पैरामेडिक्स, तकनीशियन, डॉक्टर और विशेषज्ञ और अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ता।

कर्मचारी/कार्य संपादन के लिए नियुक्त व्यक्तिय कार्यकर्ता—

कर्मचारी एक महत्वपूर्ण कारक हैं, जो संगठनों की उत्पादकता बढ़ाने और उनकी प्रगति का समर्थन करने में योगदान करते हैं। जैसा की, कर्मचारी इंजन हैं जो लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संगठनों की गतिविधियों को चलाते हैं, और वे जितने बेहतर होंगे, उस संगठन का प्रदर्शन उतना ही बेहतर होगा, जो संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता सुनिश्चित करेगा। वर्तमान संदर्भ में, COVID-19 महामारी का कर्मचारियों पर गंभीर प्रभाव पड़ा है।

नकारात्मक रूप से और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, सभी संगठनों के सभी कर्मचारी ब्प्ट-19 से प्रभावित हुए हैं, प्रभावित हो रहे हैं या इस महामारी से प्रभावित हों गए किसी भी संगठन में काम करने वाला कोई भी कर्मचारी कोरोनावायरस से प्रतिरक्षित नहीं है। COVID-19 महामारी ने पिछले दो वर्षों में संगठनों और उनके कर्मचारियों के लिए बहुत अनिश्चितता पैदा की है, जिससे उन्हें काम करने से संबंधित नियमों को बदलना पड़ा है। इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि कोविड-19 महामारी संगठनों के प्रबंधन में कुछ बदलाव लाती है। कर्मचारियों की भलाई के साथ-साथ उनके काम-काजी प्रदर्शन पर महामारी के प्रभाव की जांच करना इस अवधि के दौरान एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

कोविड-19 महामारी जैसी आपातकालीन स्थिति में, कर्मचारी तनाव के प्रति अलग-अलग तरीके से प्रतिक्रिया कर सकते हैं। इस संबंध में, यह अध्ययन करना भी दिलचस्प है कि क्या स्वास्थ्य और काम से संबंधित तनाव कारक कर्मचारियों के स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण और उनके काम-काजी प्रदर्शन पर महामारी के प्रभावों के बीच संबंधों में मध्यस्थता कर सकते हैं।

संगठनात्मक संदर्भ में COVID-19 महामारी के प्रभावों को संबोधित करने वाले अध्ययनों की नवीनता को देखते हुए, साहित्य में कुछ अध्ययनों की पहचान की गई है जो यह जांच करते हैं कि महामारी के प्रभाव कर्मचारियों की भलाई और सामान्य प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कावुगाना और रबीउ द्वारा किए गए अध्ययन का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि महामारी ने कर्मचारियों के प्रदर्शन को कैसे और किस हद तक प्रभावित किया है। परिणामों से संकेत मिलता है कि COVID-19 महामारी ने कर्मचारियों के प्रदर्शन और उनकी भलाई को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। एक अन्य अध्ययन ने 37 देशों में निजी कंपनियों के प्रदर्शन पर महामारी के प्रभाव का विश्लेषण किया। परिणामों से पता चला कि COVID-19 महामारी ने विश्लेषण किए गए लगभग सभी देशों में कंपनियों के प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया,

कुछ अध्ययनों ने गतिविधि के विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया है। ऐसे अध्ययन हैं जिन्होंने स्वास्थ्य पेशेवरों के मानसिक स्वास्थ्य पर COVID-19 महामारी के प्रभाव का विश्लेषण किया है। दोनों अध्ययनों से पता चला है कि COVID-19 महामारी ने मनोवैज्ञानिक लक्षणों, विशेष रूप से चिंता और अवसाद की गंभीरता में वृद्धि की है।

इसी तरह में बताए गए अध्ययन के परिणामों ने प्रदर्शित किया कि COVID-19 महामारी ने न केवल कर्मचारियों में चिंता की चरम स्थिति को जन्म दिया है, बल्कि नौकरी की संतुष्टि और संगठनात्मक प्रतिबद्धता में भी कमी आई है। कोविड-19 महामारी व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों तरह के जीवन को प्रभावित कर रही है और लोगों को संगठनों द्वारा सुरक्षा उपायों के बारे में सूचित रखने की आवश्यकता है और यह भी कि संकट उनकी नौकरियों को कैसे प्रभावित कर रहा है।

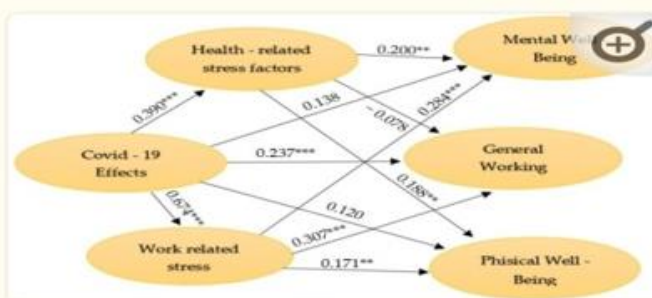
इसलिए, कुछ अध्ययन, जैसे, सुझाव देते हैं कि कोविड-19 महामारी के प्रभावों को काम पर प्रदान किए गए समर्थन द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि कर्मचारियों द्वारा माना जाने वाला संगठनात्मक समर्थन काम पर कर्मचारियों की भलाई में वापस सकारात्मक बदलावों से जुड़ा हुआ है। हालाँकि ऐसे अध्ययन हैं जिन्होंने कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और कर्मचारियों के प्रदर्शन पर COVID-19 महामारी के प्रभावों का विश्लेषण किया है, लेकिन ऐसा कोई काम नहीं पाया गया है जो यह अध्ययन करता हो कि COVID-19 महामारी कर्मचारियों के शारीरिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती है।

कोविड-19 का दौर

इसके अलावा इस अध्याय में महामारी और कर्मचारियों के स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर स्वास्थ्य और काम से संबंधित तनाव के स्तर के मध्यस्थ प्रभाव पर ध्यान केंद्रित नहीं किया है। इसके अलावा, काफी हद तक, प्रदर्शन पर COVID-19 महामारी के प्रभावों का विश्लेषण करने वाले शोध ने समग्र कर्मचारी कार्य प्रदर्शन को नहीं, बल्कि संगठनात्मक प्रदर्शन को ध्यान में रखा है।

इस अध्याय का उद्देश्य साहित्य में पहचाने गए इस अंतर को भरना है। इस अध्याय का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि कर्मचारियों द्वारा महसूस किए गए COVID-19 महामारी के प्रभाव उनके शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं, और कर्मचारियों द्वारा महसूस किए गए COVID-19 महामारी के प्रभाव कर्मचारियों के सामान्य कार्य प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करते हैं। यह अध्याय में कर्मचारियों द्वारा महसूस किए गए COVID-19 महामारी के प्रभावों और कर्मचारियों के समग्र प्रदर्शन के बीच के संबंध में स्वास्थ्य और काम से संबंधित तनाव के स्तर के मध्यस्थ प्रभाव का भी अध्ययन करता है।

यह अध्याय प्रासंगिक रूपरेखा के विनिर्देशन और शोध परिकल्पनाओं को विकसित करने के लिए विशेष साहित्य के विश्लेषण के साथ शुरू होता है। फिर, शोध पद्धति पर प्रकाश डाला गया है और इस अध्याय में उपयोग की गई सामग्रियों और विधियों का वर्णन किया गया है। इसके बाद, अध्ययन के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं और कर्मचारियों के स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण पर COVID-19 महामारी के प्रभावों के साथ-साथ उनके कार्य प्रदर्शन पर संबंधों पर चर्चा की गई है। इसके अलावा, स्वास्थ्य और कार्य-संबंधी तनाव कारक किस हद तक उपरोक्त संबंधों की मध्यस्थता करते हैं, इस पर भी जोर दिया गया है।



आकृति 1

संरचनात्मक मॉडल। स्रोत: स्मार्टप्लस 3.3.3 [67]
के साथ लेखकों की गणना। *** $p < 0.001$; ** $p < 0.01$

कर्मचारी कितने प्रकार के होते हैं?

कर्मचारी तीन प्रकार के होते हैं: पूर्णकालिक कर्मचारी, अंशकालिक कर्मचारी और अस्थायी कर्मचारी। पूर्णकालिक कर्मचारी एक नियमित कर्मचारी होता है जिसे आम तौर पर सप्ताह में 40 घंटे काम करने के लिए रखा जाता है, लेकिन यह 35 से 40 घंटे प्रति सप्ताह तक हो सकता है। इन कर्मचारियों को कंपनी की ओर से कई तरह के लाभ दिए जाते हैं।

कर्मचारियों के प्रकार—

कर्मचारी मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं:—

(1) पूर्णकालिक कर्मचारी—

पूर्णकालिक कर्मचारी वे व्यक्ति होते हैं जो प्रति सप्ताह एक मानक संख्या में घंटे काम करते हैं, आमतौर पर लगभग 35 से 40 घंटे। उन्हें स्थायी कर्मचारी माना जाता है और वे दीर्घकालिक रोजगार की स्थिरता और सुरक्षा का आनंद लेते हैं।

भूमिकाएं और लाभ:—

- पूर्णकालिक कर्मचारी अक्सर संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा उसके दैनिक कार्यों और दीर्घकालिक उद्देश्यों में योगदान देते हैं।
- उन्हें स्वास्थ्य बीमा, सेवानिवृत्ति योजना, सेवितन अवकाश और अन्य प्रोत्साहन सहित व्यापक लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

(2) अंशकालिक कर्मचारी— अंशकालिक कर्मचारी पूर्णकालिक कर्मचारियों की तुलना में कम घंटे काम करते हैं, आमतौर पर प्रति सप्ताह 35 घंटे से भी कम। वे कर्मचारी और नियोक्ता दोनों को लचीलापन प्रदान करते हैं।

भूमिकाएं और लाभ:—

- अंशकालिक कर्मचारी, अस्थिर कार्यभार या मौसमी मांगों वाले व्यवसायों के लिए मूल्यवान होते हैं, क्योंकि वे पूर्णकालिक प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता के बिना रिक्त स्थान को भर सकते हैं।
- वे अभी भी कुछ लाभों के लिए पात्र हो सकते हैं, हालांकि उन्हें उनके काम किए गए घंटों के आधार पर आनुपातिक लाभ दिया जा सकता है।
- अंशकालिक व्यवस्था कर्मचारियों को काम के अलावा अन्य रुचियों या जिम्मेदारियों को पूरा करने की अनुमति देती है, जिससे कार्य-जीवन संतुलन बेहतर होता है।

कोविड-19 का दौरा

(3) अस्थायी कर्मचारी— गिग वर्कर, जिन्हें अस्थायी कर्मचारी भी कहा जाता है, को एक निश्चित अवधि या प्रोजेक्ट के लिए काम पर रखा जाता है। इन कर्मचारियों को व्यस्त अवधि के दौरान अल्पकालिक मांगों को पूरा करने के लिए काम पर रखा जाता है।

भूमिकाएं और लाभ:—

- गिग वर्कर्स स्थायी पदों की प्रतिबद्धता के बिना परिवर्तनशील कार्यभार के प्रबंधन में लचीलापन प्रदान करते हैं।
- वे विशेष परियोजनाओं या व्यस्त मौसमों के लिए विशिष्ट कौशल और विशेषज्ञता लाते हैं, जिससे उत्पादकता में सुधार होता है।
- यद्यपि उन्हें स्थायी कर्मचारियों के समान लाभ नहीं मिलते, फिर भी उन्हें बहुमूल्य कार्य अनुभव और नेटवर्किंग के अवसर प्राप्त होते हैं।

कोविड-19 का कर्मचारियों पर सकारात्मक प्रभाव—

घर से काम करने से कर्मचारियों पर कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। सकारात्मक पक्ष पर, कर्मचारियों को समय और स्थान के संबंध में लचीलापन मिलता है। कर्मचारियों को कार्यालय आने-जाने में लगने वाले समय की बचत होती है और उन्हें अपने पसंदीदा समय पर काम करने की सुविधा मिलती इसी के संदर्भ में आगे—

(1) कर्मचारियों को घर बैठे-बैठे कार्य करने की सुविधा— कोविड-19 के दौरान सभी कर्मचारियों को घर बैठे काम करने की सुविधा मिली लोगों को घंटों सफर करके अपने कार्यस्थल तक जाने में असुविधा होती थी परंतु कोविड के समय लोगों को असुविधा के साथ-साथ सुविधा भी प्राप्त हुई लोग घर बैठे अपना कार्य कर रहे थे।

(2) सुरक्षा के साथ कार्य करने की सुविधा— कोविड के दौरान लोग अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहे थे लोग घरों से बाहर निकलने से घबराते थे ऐसे में लॉकडाउन हुआ और लोगों को राहत मिली लोग अपना और अपने परिवार के सुरक्षा को ध्यान में रखकर घर से काम करना शुरू किये इससे कर्मचारी स्वयं एवं अपने परिवार को भी सुरक्षित रख पाए।

(3) घर बैठे परिवार का भरण-पोषण कर पाना— कोविड के दौरान सभी कर्मचारी चाहे वह शासकीय कर्मचारी हो या अशासकीय कर्मचारी सभी ने घर बैठे कार्य कर अपने परिवार का भरण — पोषण किया ,कर पाने में सक्षम भी हुए कोविड के दौरान जहां लोग अपना भरण — पोषण करने में समर्थ नहीं थे वहां प्रत्येक कर्मचारी ने अपने पूरे परिवार का भरण-पोषण किया।

(4) अभिभावक (कर्मचारी) अपने बच्चों को एवं परिवार को समय दे पाए— कर्मचारी अपने काम को पहली प्राथमिकता देते थे और अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते थे और परिवार को भी परंतु कोविड का एक सकारात्मक प्रभाव यह रहा कि कर्मचारी काम के साथ-साथ अपने बच्चों एवं परिवार को समय दे पा रहे थे, कर्मचारी एक अच्छे अभिभावक के रूप में भी उभर कर सामने आए।

(5) घर बैठे रोजगार के अवसर प्राप्त हुए— एक तरफ जहां कोविड के दौरान लोगों के कार्य बंद हो रहे थे वहीं लोगों को नए-नए क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए लोग वर्क फ्रॉम होम की सुविधा का आनंद भी ले पा रहे थे लोगों को घर बैठे रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए।

(6) कर्मचारियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण की सुविधा— जितने भी नए पुराने कर्मचारी थे उन्हें ऑनलाइन प्रशिक्षण भी दिया गया था ताकि वह अपने कार्य को बेहतर तरीके से कर सकें इस दौरान लोग मोबाइल फोन और डिजिटल उपकरणों से ज्यादा जुड़ पाए और अपना काम बेहतर तरीके से कर पाए ऑनलाइन कार्य करने से लोग नई-नई चीजों को भी सीख पाए।

(7) कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव— एक तरफ जहां लोग कोविड महामारी के शिकार हो रहे थे वहीं दूसरी तरफ लोगों के स्वास्थ्य में भी सुधार आया लोग घर पर रहकर कार्य कर रहे थे इसलिए वे अपने स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रख पा रहे थे समय पर खाना नाश्ता और स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर योग भी अपना रहे थे कोविड के दौरान एक मूल मंत्र— योग करो, निरोग रहो, काफी प्रचलित था।

(8) सोशल मीडिया से जुड़े कर्मचारियों को लाभ— कोविड के दौरान प्रत्येक क्षेत्र के कर्मचारियों को नुकसान सहना पड़ा परंतु सोशल मीडिया कर्मचारियों का कार्य वैसा ही चल रहा था जैसे पहले था सभी कर्मचारियों के कार्य जहां बंद हो रहे थे वही सोशल मीडिया के कर्मचारियों को लाभ हुआ इसका एक मुख्य कारण था कोविड ,कोविड के दौरान लोग सोशल मीडिया पर ज्यादा एक्टिव सक्रिय थे।

(9) कर्मचारियों को समय की बचत हुई— कोविड के दौरान सभी कर्मचारियों की समय की बचत हुई पहले लोगों को घर से ऑफिस तक जाने में घंटों ट्रैफिक का सामना करना पड़ता था कोविड के दौरान लोग घर से ही कार्य कर रहे थे जिससे उनके समय की बचत हुई समय के बचत से लोग अपने कार्य के साथ बचे हुए समय में कुछ नया सीखने का करने का प्रयास भी कर रहे थे।

कोविड-19 का दौरा

(10) घर बैठे तनखाह ध्वेतन प्राप्त हुई- कोविड के दौरान जहां लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय थी वही खाने-पीने का सामान जुटा पाना संभव नहीं था इसमें सभी कर्मचारी ने निष्ठा पूर्वक कार्य किया प्रत्येक क्षेत्र के कर्मचारी कोविड के दौरान घर से कार्य कर रहे थे ऐसे में उन्हें घर बैठे वेतन भी प्राप्त हुई जिससे सभी कर्मचारी अपना जीवन यापन सुख पूर्वक कर पाए।

कोविड-19 का कर्मचारियों पर नकारात्मक प्रभाव-

कोविड-19 के नकारात्मक प्रभाव के कारण कर्मचारियों के जीवन में नकारात्मक प्रभाव भी पड़े जैसे उनके कार्य-जीवन की सीमाओं के धुंधले होने से ये प्रभाव और भी बढ़ गया। इस तरह की धारणाएं करियर की प्रगति के बारे में चिंता, रोजगार सुरक्षा के बारे में संदेह, संक्रमण का जोखिम और मृत्यु या प्रियजनों को खोने के डर के साथ मिलकर कर्मचारियों के तनाव और कल्याण को प्रभावित करेंगी। इस संदर्भ में आगे इस प्रकार है-

(1) लाखों कर्मचारियों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ा- कोविड के दौरान लाखों लोगों के रोजगार छूट गए लोग बेरोजगार हो गए लोगों की आर्थिक स्थिति गिरती गई लोगों के रोजगार के अवसर बंद होने लगे एक तरफ जहां सरकारी कर्मचारी एवं बड़े-बड़े प्राइवेट संस्थानों के कर्मचारी घर से काम करने लगे वही छोटे-मोटे काम धंधे करके परिवार चलाने वाले लोग घर में बैठ गए ऐसे में उनकी आमदनी का कोई स्रोत नहीं रह गया था। लोग बेरोजगार एवं बेघर भी हो गये।

(2) कर्मचारियों के कोविड पॉजिटिव होने से उन्हें होने वाली असुविधा- कोविड के दौरान लाखों कर्मचारियों को कोविड जैसी महामारी का सामना करना पड़ा हजारों लोग इससे प्रभावित हुए, कोविड पॉजिटिव कर्मचारियों को कार्य छोड़कर अस्पतालों में जाना पड़ा ताकि उनका बेहतर उपचार हो सके इस दौरान उनके परिवार को पैसों की काफी समस्या हुई, कोविड के दौरान स्वस्थ कर्मचारियों को अधिक नुकसान हुआ असुविधा का सामना करना पड़ा।

(3) पूर्ण रूप से परिवार का भरण पोषण न कर पाना- ज्यादातर कर्मचारियों द्वारा अपने परिवार का पालन पोषण हो रहा था वही छोटे-मोटे काम धंधे करने वाले मजदूर अपने परिवार का भरण पोषण भी उचित रूप से नहीं कर पा रहे थे उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो जो ऑटो रिक्शा, टेला चलाने वाला, चौपाटी पर टेला लगाने वाला, मजदूरी करने वाले सभी के काम पूरी तरह से बंद हो गए थे जिस कारण हजारों लोगों की गरीबी और भुखमरी के कारण मौत भी हुई। कर्मचारी अपने परिवार का पूर्ण रूप से भरण पोषण नहीं कर पाए।

(4) कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान दफ्तर और कारखानों का बंद होना— कोविड के दौरान भारत सरकार द्वारा लॉकडाउन किया गया जिससे सभी दफ्तरों एवं कारखाने को बंद करने को भी कहा गया इस दौरान लोगों के कार्य भी बंद हुए लोग रोजगार के लिए भटकते रहे परंतु उन्हें उचित रोजगार नहीं मिल पाया। कई लोगों के रोजगार, नौकरी छुट गये जिससे उनको मानसिक संतुलन, तनाव, चिंता का सामना करना पड़ा ।

(5) कर्मचारियों में अलगाव की भावना जागृत होना— कोविड के दौरान कर्मचारी अलगाव भी महसूस कर रहे थे जितना लंबा अलगाव होगा मनोवैज्ञानिक तनाव उतना ही अधिक बढ़ेगा जहां कर्मचारी दफ्तरों एवं कारखाने में मिलजुल कर कार्य करते थे वहीं कोविड के दौरान लोगों को अलगाव की भावना महसूस हुई जिसे तनाव पैदा होता है जिससे लोगों के मानसिक संतुलन पर प्रभाव पड़ा।

(6) स्वयं या परिवार के सदस्यों के संक्रमित होने का भय— इस दौरान कर्मचारियों को इस बात का भी भय बना रहता था कि कहीं वे स्वयं या उनके परिवार का कोई भी सदस्य इस महामारी से संक्रमित ना हो जाए हर समय उनको यही डर रहा था कहीं उन्हें या उनके परिवार को कुछ ना हो जाए यह भी एक नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

(7) कर्मचारियों के दिनचर्या में परिवर्तन ,संपर्क में कमी— कर्मचारियों के दिनचर्या में परिवर्तन हुआ लोग एक दूसरे के संपर्क में ना आने के कारण काफी तनाव भी महसूस करने लगे, अपने परिवार जनों के लोगों से जो उनसे दूर रहते थे उनसे ना मिल पाने की निराशा जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। जहाँ घंटों भर बैठकर बातें किया करते थे वही कोविड ने लोगों की दिनचर्या ही बदल कर रख दी।

(8) दैनिक गतिविधियों को करने की क्षमता में कमी से निराशा और ऊब पैदा हुई— कोविड के दौरान कर्मचारियों के दैनिक गतिविधियों में कमी हुई जैसे—लोग घरों से बाहर ना जा पाने के कारण बाहरी खेलकूद की, डांस क्लासेस, जुम्बा (नृत्य) क्लासेसअनेको प्रकार के रचनात्मक क्रिया से वंचित रहे जिस कारण उन्हें घर बैठे निराशा और ऊबाउपन महसूस हुआ जिसके कारण लोगों के स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव पड़ा। शारीरिक व मानसिक रूप से प्रभावित हुए।

(9) सोशल मीडिया, मोबाइल फोन का नकारात्मक प्रभाव— कोविड के दौरान बड़ों से लेकर बच्चे बूढ़े भी सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय थे। मोबाइल फोन के अधिक प्रयोग से लोगों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ा, बच्चे कई प्रकार के ऑनलाइन खेलों के शिकार हुए, उनसे प्रभावित हुए उनका मानसिक संतुलन भी बिगड़ा, जहाँ दो वक्त की रोटी जुटा पाना भी मुश्किल था, वही वह फोन रिचार्ज को भी अधिक महत्व दे रहे थे एक ओर जहां मोबाइल फोन ने लोगों को समय का सदुपयोग करना सिखाया वही लोगों के जीवन को बर्बाद भी किया। लोग अपने जीवन में मोबाइल फोन को अधिक महत्व देने लगे।

कोविड-19 का दौर

(10) कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव— इस महामारी के कारण लाखों हजार लोगों के घर उजड़ गए लोग बेघर भी हो गए वही सबसे ज्यादा उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ा एक तरफ जहां कर्मचारी को घर बैठे कार्य करने के सुविधा प्राप्त हुई वहीं घंटों भर मोबाइल फोन, लैपटॉप जैसे इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के प्रयोग से कर्मचारियों को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ा ज्यादा समय तक बैठे रहने से मोटापे की समस्या, लगातार स्क्रीन को देखने से आंखों की समस्या, शरीर में ज्यादा हलचल न होने के कारण शारीरिक संतुलन का बिगड़ना इस प्रकार के अनेको स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष—

काम की निरंतर विकसित और गतिशील दुनिया में, कर्मचारी शब्द एक केंद्रीय स्थान रखता है, जो आधुनिक संगठनों की रीढ़ को परिभाषित करता है। यह उन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनकी लगन, कौशल और प्रतिबद्धता कॉर्पोरेट मशीनरी में जान फूंकती है, व्यवसायों को आगे बढ़ाती है। व्यस्त कार्यालय स्थानों से लेकर डिजिटल क्षेत्र के दूरदराज के कोनों तक, कर्मचारी किसी भी संगठन की सफलता और विकास को आकार देने में एक अपूरणीय भूमिका निभाते हैं। आपको अपने कार्यस्थल पर अनुशंसित सावधानियों और नीतियों का पालन करना चाहिए। आपके कार्यस्थल के लिए अनुकूलित बहुस्तरीय नियंत्रण विशेष रूप से उन श्रमिकों के लिए महत्वपूर्ण हैं जो बिना टीकाकरण वाले या अन्यथा जोखिम में हैं। कई नियोक्ताओं ने COVID-19 रोकथाम कार्यक्रम स्थापित किए हैं जिनमें बिना टीकाकरण वाले और अन्यथा जोखिम वाले श्रमिकों को सुरक्षित रखने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम शामिल हैं। इन COVID-19 रोकथाम कार्यक्रमों में टेलीवर्क और लचीले शेड्यूल, इंजीनियरिंग नियंत्रण (विशेष रूप से वेंटिलेशन), प्रशासनिक नीतियाँ (जैसे, टीकाकरण नीतियाँ), PPE चेहरे को ढंकना, शारीरिक दूरी और उच्च-स्पर्श सतहों पर ध्यान देने के साथ बेहतर सफाई कार्यक्रम जैसे उपाय शामिल हैं। कर्मचारी अपना काम बेहतर तरीके से कर सके इसके लिए यथासंभव बेहतर प्रयास करने चाहिए। हमेशा अपने कर्मचारियों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके सर्वोत्तम ग्राहकों के साथ करें।— स्टीफन आर. कोवे

परामर्शदाता— डॉ. विनय प्रताप सिंह (संस्था प्राचार्य श्याम शिक्षा महाविद्यालय सक्ती)

संदर्भ ग्रंथ सूची—

1. [https://byjus. Com/pragraphwriting.com](https://byjus.Com/pragraphwriting.com)
2. <https://www.hopinmedicine.org.com>
3. [pmcpubmed central.in.com](https://pubmedcentral.in.com)
4. [HireQuatient.in.com](https://hirequotient.in.com)
5. www.google.com